

अकादमिक स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका

कोमल रानी तेहलान*, योगेश कुमार[†]

*[†] महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, 124001, हरियाणा, भारत

आलेख जानकारी

प्राप्त: 19 दिसंबर, 2023

संशोधित: 16 फरवरी, 2024

प्रकाशित: 30 जून, 2024

संपादक: डॉ. सुनील दत्त

*अनुरूपी लेखक

Email:

tehlankomal@gmail.com

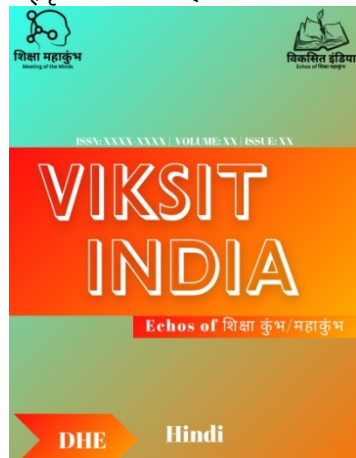
8708676991

खुला एक्सेस

DOI:

यह क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन लाइसेंस

(<http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>) की शर्तों के तहत वितरित एक ओपन एक्सेस लेख है, जो किसी भी माध्यम में अप्रतिबंधित उपयोग, वितरण और पुनरुत्पादन की अनुमति देता है, बशर्ते मूल कार्य उचित रूप से उद्धृत किया गया है।



<https://vih.rase.co.in/>

Copyright© DHE

सारांश

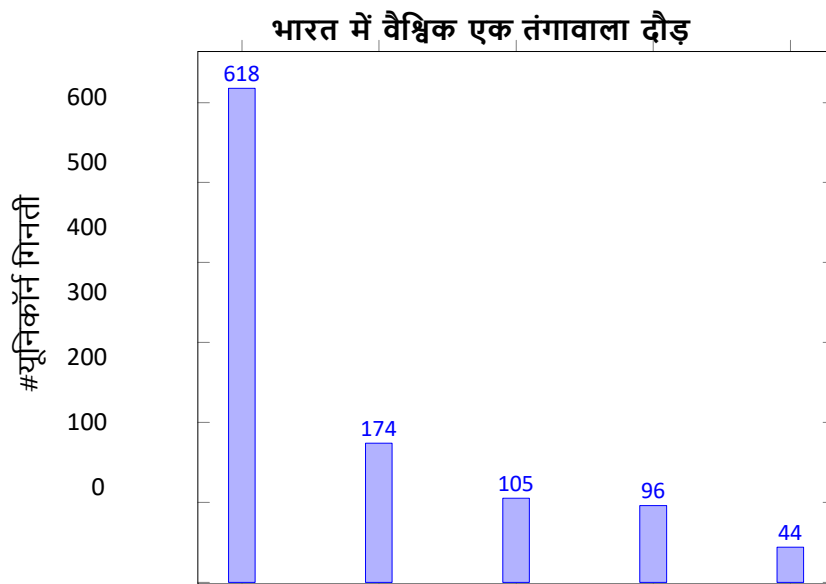
भारत वैश्विक स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप हब है। संयुक्त राज्य अमेरिका, एक विरोधाभास को प्रदर्शित करता है जहां शैक्षणिक स्टार्टअप अभी भी बने हुए हैं स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र की समग्र सफलता के बावजूद, हम अभी भी हाशिये पर हैं। इस पेपर का उद्देश्य शैक्षणिक स्टार्टअप के सामने आने वाली चुनौतियों का पता लगाना है। भारत, मूल्यांकन करना मौजूदा सरकार पहल, और अन्वेषण करना संभावना नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) के प्रावधान एक अधिक मजबूत शैक्षणिक स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देने में योगदान दें। व्यावहारिक रूप से, यह उन कारकों को उजागर करेगा जिन्होंने कुछ भारतीय संस्थानों को उपजाऊ बनाया के लिए उद्यमशीलता अंदर एक अकादमिक सेटिंग।

कूट शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शैक्षणिक चालू होना, उद्यमी- जहाज , चालू होना , एनईपी 2020.

1. परिचय

भारत स्टार्टअप के लिए दूसरा सबसे बड़ा वैश्विक केंद्र है, जो केवल संयुक्त राज्य अमेरिका से पीछे है। 2022 के वित्तीय वर्ष के अंत तक, देश में 57,000 से अधिक स्टार्टअप लॉन्च हो चुके थे, जिनमें से 40,000 सक्रिय रूप से संचालित हो रहे थे। उल्लेखनीय रूप से, भारत वैश्विक स्तर पर यूनिर्कोर्न की तीसरी सबसे बड़ी संख्या का दावा करता है, जिसमें 105 स्टार्टअप इस प्रतिष्ठित स्थिति को प्राप्त कर चुके हैं। [1] बेंगलूर, मुंबई और दिल्ली के शहरों ने दुनिया भर के शीर्ष 40 स्टार्टअप हब में अपनी स्थिति मजबूत कर ली है, जैसा कि 2022 की ग्लोबल स्टार्टअप इकोसिस्टम रिपोर्ट [2] द्वारा दर्शाया गया है।

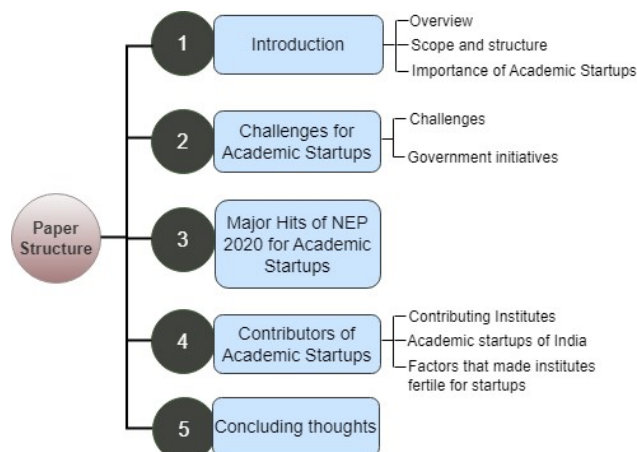
स्टार्टअप परिदृश्य में इन उल्लेखनीय उपलब्धियों के बावजूद, देश के भीतर अकादमिक उद्यमिता में एक उल्लेखनीय अंतर बना हुआ है। यह कमी पेशेवरों, विशेष रूप से डेटा वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की पारंपरिक रोजगार के अवसरों की तलाश करने से उद्यमिता की संभावना को आगे बढ़ाने की अनिच्छा में स्पष्ट है, यहाँ तक कि मंदी के दौर में भी। अकादमिक स्टार्टअप आमतौर पर विश्वविद्यालयों से तब उभरते हैं जब शोधकर्ता, संकाय या छात्र व्यावसायिक क्षमता वाले अभिनव समाधान या प्रौद्योगिकियां विकसित करते हैं। ये स्टार्टअप अक्सर अकादमिक शोध को वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों और उत्पादों में बदलने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। भारतीय बाजार के ऐतिहासिक मानदंड, जिनमें परिवार द्वारा संचालित उद्यमों और व्यापक कॉर्पोरेट अनुभव वाले लोगों का वर्चस्व है, ने पारंपरिक रूप से उद्यमशीलता की आकांक्षाओं के उद्भव में बाधा डाली है [13]। हालांकि, एक परिवर्तनकारी मोड़ में, प्रौद्योगिकी स्टार्टअप उत्प्रेरक के रूप में उभरे हैं, बाधाओं को तोड़ रहे हैं और नवीन विचारों वाले महत्वाकांक्षी उद्यमियों के लिए अवसरों का लोकतंत्रीकरण कर रहे हैं [19]। इस बदलाव ने खेल के मैदान को समतल कर दिया है, जो पारिवारिक व्यावसायिक संबंधों या दशकों पुरानी कॉर्पोरेट पृष्ठभूमि से परे व्यक्तियों को अपना उद्यम स्थापित करने का मार्ग प्रदान करता है [3]। निवेश का यह प्रवाह न केवल स्टार्टअप के विकास का समर्थन करता है बल्कि समग्र आर्थिक गतिविधि को भी उत्तेजित करता है। वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी उत्पादों या सेवाओं के साथ अकादमिक स्टार्टअप निर्यात वृद्धि में योगदान करते हैं और वैश्विक अर्थव्यवस्था में देश की स्थिति को बढ़ाते हैं, आर्थिक कूटनीति को बढ़ावा



अंजीर। १: ग्राफ़ दिखा भारत में एक तंगावाला दौड़

1.1 दायरा और संरचना

यह पत्र भारत में अकादमिक स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका की पड़ताल करता है और निम्नलिखित शोध प्रश्नों के उत्तर देता है: — [RQ1]: वैश्विक स्टार्टअप दौड़ में भारत कहां खड़ा है और अकादमिक स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र क्यों महत्वपूर्ण है? — [RQ2]: भारत में अकादमिक स्टार्टअप के सामने क्या चुनौतियाँ हैं और उन्हें बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा की गई पहल? — [RQ3]: अकादमिक स्टार्टअप में NEP 2020 की प्रमुख सफलताएँ क्या हैं? — [RQ4]: भारत में अकादमिक स्टार्टअप के प्रमुख योगदानकर्ता कौन हैं और किन कारकों ने उन्हें स्टार्टअप के लिए उपजाऊ बनाया? लेख के बाकी हिस्सों में, हम इनमें से प्रत्येक शोध प्रश्न को विस्तार से संबोधित करते हैं, जैसा कि चित्र 2 में दिखाया गया है। हम विश्व स्तर पर स्टार्टअप में भारत के वर्तमान स्थान को प्रस्तुत करके और अकादमिक स्टार्टअप और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के महत्व पर चर्चा करके भाग 1 में RQ1 का उत्तर देते हैं इसके बाद, भाग 3 में, हम NEP 2020 की उन प्रमुख उपलब्धियों का विश्लेषण करेंगे जो भारत में अकादमिक स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रशिक्षण और मूल्यांकन के लिए मौजूदा उपकरणों के संदर्भ में शिक्षकों की दक्षताओं का मूल्यांकन। भाग 4 में, हम भारत में अकादमिक स्टार्टअप में प्रमुख योगदानकर्ताओं और उन्हें स्टार्टअप और उद्यमिता के लिए उपजाऊ बनाने वाले कारकों पर चर्चा करते हैं। लेख का समापन भाग 5 में किया गया है।



अंजीर। 2: संरचना का कागज़

1.2 अकादमिक स्टार्टअप का महत्व

अकादमिक स्टार्टअप नवाचार, आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण हैं। जैसे-जैसे अकादमिक स्टार्टअप बढ़ते हैं, वे रोजगार के अवसर पैदा करते हैं, नौकरी के बाजारों को उत्तेजित करते हैं और बेरोजगारी दरों को कम करते हैं। नवीन तकनीकों और व्यवसाय मॉडल के विकास के माध्यम से, वे आर्थिक परिदृश्य में विविधता जोड़ते हैं, पारंपरिक क्षेत्रों पर निर्भरता को कम करते हैं और आर्थिक चुनौतियों का सामना करने में लचीलापन बढ़ाते हैं। यह शिक्षा और उद्योग के बीच जोखिम लेने, नवाचार और सहयोग की संस्कृति को प्रोत्साहित करता है। अकादमिक स्टार्टअप की सफलता घरेलू

और अंतर्राष्ट्रीय दोनों तरह के निवेशों को आकर्षित करती है। देते हैं और व्यापार संबंधों को मजबूत करते हैं। उनका योगदान वित्तीय लाभ से परे है, सामाजिक कल्याण को प्रभावित करता है और देशों को तकनीकी और आर्थिक प्रगति के मामले में सबसे आगे रखता है [13]।

1.3 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारत के शैक्षिक परिदृश्य को बदलने के लिए एक दूरदर्शी खाका है। तीन दशकों के ठहराव के बाद यह व्यापक नीति देश के सीखने के दृष्टिकोण को फिर से परिभाषित करती है। अच्छी तरह से विकसित व्यक्तियों के पोषण पर केंद्रित, एनईपी एक लचीली और बहु-विषयक शिक्षा प्रणाली की वकालत करती है जो बचपन से लेकर उच्च शिक्षा तक फैली हुई है। यह 21वीं सदी की जटिलताओं के लिए छात्रों को तैयार करते हुए आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और व्यावहारिक कौशल विकसित करने पर जोर देता है। अनुसंधान, नवाचार और उद्यमशीलता के महत्व को पहचानते हुए, नीति इन तत्वों को शैक्षिक अनुभव के मूल में एकीकृत करती है [4]। एनईपी 2020 के प्रमुख स्तंभों में से एक समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देना है, जिसका उद्देश्य समाज के सभी वर्गों के शिक्षार्थियों तक पहुँचना है। नीति सीखने के परिणामों को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग को प्रोत्साहित करती है और रटने के बजाय समझ और अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मूल्यांकन प्रणाली के पुनर्गठन का प्रस्ताव करती है। निरंतर सीखने और अनुकूलनशीलता की संस्कृति को बढ़ावा देकर, एनईपी न केवल जानकार व्यक्तियों का निर्माण करने की कल्पना करता है, बल्कि एक ऐसी मानसिकता भी विकसित करता है जो तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य की चुनौतियों में प्रभावी रूप से योगदान दे सके। कुल मिलाकर, एनईपी 2020 एक गतिशील, दूरदेशी शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की दिशा में एक परिवर्तनकारी कदम है जो भारत की विविध आबादी की उभरती जरूरतों के साथ संरेखित है [11]।

2. भारत में अकादमिक स्टार्टअप के लिए चुनौतियाँ

अकादमिक उद्यमिता में अकादमिक शोध आधारित विचार, बौद्धिक संपदा (आईपी) निर्माण और इसका व्यावसायीकरण शामिल है। अकादमिक उद्यमिता से आर्थिक प्रभाव और नौकरी में वृद्धि महत्वपूर्ण हो सकती है। अकादमिक स्टार्टअप की सफलता अक्सर सरकारी नीतियों, फंडिंग तक पहुंच, शिक्षा और उद्योग के बीच सहयोग और समग्र उद्यमशीलता संस्कृति जैसे कारकों पर निर्भर करती है। इसलिए, शैक्षणिक संस्थानों को इस प्रयास में अपने संकाय, छात्रों और पूर्व छात्रों का समर्थन करना चाहिए। भारत में अकादमिक स्टार्टअप की मूलभूत चुनौतियाँ हैं:-

- खराब उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र और अभिविन्यास [18]
- नौकरियों के लिए छात्रों को तैयार करने के लिए विश्वविद्यालयों और संस्थानों का झूकाव।
- संकाय/छात्रों के लिए उद्यमिता प्रशिक्षण का अभाव।

-अप्रभावी शिक्षण पद्धति।

-आईटी उत्पादों और सेवाओं के प्रति पक्षपात, जबकि अन्य क्षेत्रों में अकादमिक स्टार्टअप आगे बढ़ रहे हैं।

-इन पहलों की सफलता को मापने के लिए कोई तर्कसंगत मानक नहीं।

-भारत में उद्यमिता में लैंगिक असमानता।

-वित्तपोषण [5]

2.1 शैक्षणिक स्टार्टअप के लिए सरकारी पहल

भारत सरकार ने देश में शैक्षणिक स्टार्टअप के विकास को बढ़ावा देने के लिए कई पहलों को लागू किया है। इन पहलों का उद्देश्य एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है जो शिक्षा और उद्योग के बीच नवाचार, उद्यमशीलता और सहयोग को प्रोत्साहित करता है। कुछ उल्लेखनीय सरकारी पहलों में शामिल हैं: स्टार्टअप इंडिया: 2016 में लॉन्च किया गया, यह कर छूट, फंडिंग सहायता और विनियामक आवश्यकताओं को आसान बनाने के लिए स्व-प्रमाणन अनुपालन जैसे लाभ प्रदान करता है, मेक इन इंडिया: 2014 में लॉन्च किया गया मेक इन इंडिया, स्टार्टअप को स्थानीय स्तर पर उत्पादों को विकसित करने और निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे नवाचार और आत्मनिर्भरता की संस्कृति को बढ़ावा मिलता है, अटल इनोवेशन मिशन (एआईएम): नीति आयोग द्वारा शुरू किया गया एआईएम, छात्रों के बीच नवाचार और उद्यमशीलता की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया है। इसमें स्कूलों में अटल टिकरिंग लैब्स, अटल इनक्यूबेशन सेंटर और अटल न्यू इंडिया चैलेंज जैसी पहल शामिल हैं, जो प्रभावशाली समाधानों पर काम कर रहे स्टार्टअप्स को समर्थन देती हैं, नवाचारों के विकास और दोहन के लिए राष्ट्रीय पहल (NIDHI): यह विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से विचारों और नवाचारों को पोषित करने और स्टार्टअप्स को वित्तीय सहायता और सलाह प्रदान करने पर केंद्रित है, जैव प्रौद्योगिकी इग्नیشن अनुदान (BIG) योजना: BIG नवीन विचारों को व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य उत्पादों में बदलने के लिए धन और सलाह प्रदान करके जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र में स्टार्टअप का समर्थन करता है, हैदराबाद का अनुसंधान और नवाचार सर्कल (RICH): इसका उद्देश्य स्टार्टअप को अनुसंधान संस्थानों से जोड़ना है। यह अकादमिक क्षेत्र में काम करने वाले स्टार्टअप के लिए सहयोग, ज्ञान के आदान-प्रदान और संसाधनों तक पहुंच की सुविधा प्रदान करता है [21]। छात्रों और शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय नवाचार और स्टार्टअप नीति 2019, [6] आत्मनिर्भर भारत: भारत को आत्मनिर्भर बनाना [16]।

3. शैक्षणिक स्टार्टअप के लिए NEP 2020 की प्रमुख सफलताएँ

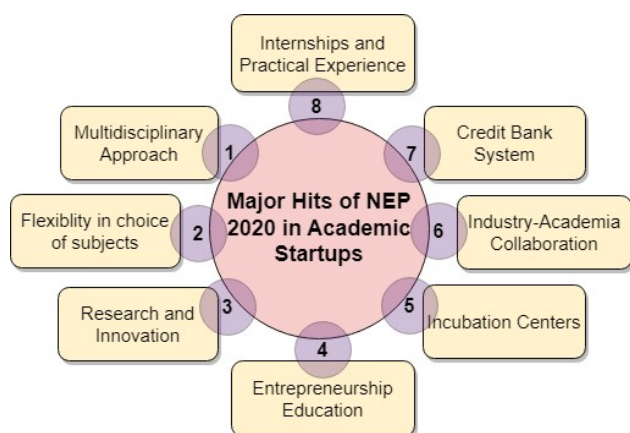
भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का उद्देश्य शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार लाना है ताकि इसे अधिक लचीला, बहु-विषयक और 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जा सके। हालाँकि नीति में स्पष्ट रूप से "शैक्षणिक स्टार्टअप संस्कृति" शब्द का उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन NEP में कई प्रावधान ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देने में योगदान दे

सकते हैं। यहाँ कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे NEP 2020 शैक्षणिक स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देने में भूमिका निभा सकता है [7]:

बहु-विषयक दृष्टिकोण NEP बहु-विषयक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है, जिससे छात्रों को विविध विषयों का चयन करने की अनुमति मिलती है। यह अंतःविषय कौशल के विकास में मदद कर सकता है, जो शिक्षा जगत में नवाचार और उद्यमिता के लिए महत्वपूर्ण है।

लचीलापन और विकल्प नीति विषयों और पाठ्यक्रमों के चयन में लचीलेपन को बढ़ावा देती है, जिससे छात्रों को अपनी रुचियों और करियर लक्ष्यों के अनुसार अपनी शिक्षा को ढालने की अनुमति मिलती है। यह लचीलापन छात्रों को शैक्षणिक ढाँचे के भीतर उद्यमशीलता संबंधी विचारों का पता लगाने और विकसित करने के लिए सशक्त बना सकता है।

अनुसंधान और नवाचार एनईपी शिक्षा के सभी स्तरों पर अनुसंधान और नवाचार के महत्व पर जोर देता है। अनुसंधान पर यह ध्यान नवीन विचारों और प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान कर सकता है जो अकादमिक स्टार्टअप के लिए आधार बन सकते हैं [4]।



अंजीर। 3: प्रमुख हिट्स का एनईपी 2020 के लिए अकादमिक स्टार्टअप

उद्यमिता शिक्षा एनईपी पाठ्यक्रम में उद्यमिता शिक्षा के एकीकरण की वकालत करता है। इसमें व्यवसाय नियोजन, वित्तीय साक्षरता और अन्य उद्यमशीलता कौशल पर पाठ्यक्रम शामिल हो सकते हैं, जो छात्रों को अपना खुद का उद्यम शुरू करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करते हैं [8]।

इनक्यूबेशन सेंटर और सहयोग नीति उद्यमशीलता प्रतिभा को पोषित करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों में इनक्यूबेशन सेंटर की स्थापना को प्रोत्साहित करती है। ये केंद्र शिक्षा और उद्योग के

बीच सहयोग के लिए केंद्र के रूप में काम कर सकते हैं, एक ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा दे सकते हैं जहाँ अकादमिक शोध को स्टार्टअप में बदला जा सकता है।

उद्योग-अकादमिक सहयोग एनईपी शिक्षा और उद्योग के बीच मजबूत संबंधों को बढ़ावा देता है। यह सहयोग विचारों, संसाधनों और विशेषज्ञता के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान कर सकता है, जिससे एक ऐसा माहौल बन सकता है जहाँ अकादमिक शोध को वास्तविक दुनिया की समस्याओं पर लागू किया जा सकता है और स्टार्टअप के लिए अवसर पैदा हो सकते हैं।

क्रेडिट बैंक सिस्टम क्रेडिट बैंक सिस्टम की शुरुआत छात्रों को कई प्रवेश और निकास बिंदुओं पर क्रेडिट जमा करने की अनुमति देती है। यह उन छात्रों के लिए फायदेमंद हो सकता है जो अपनी शैक्षिक प्रगति से समझौता किए बिना अकादमिक गतिविधियों को उद्यमशीलता के प्रयासों के साथ जोड़ना चाहते हैं [4]।

इंटरनशिप और व्यावहारिक अनुभव एनईपी में इंटरनशिप और व्यावहारिक अनुभव पर जोर छात्रों को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों और उद्योग प्रथाओं से अवगत करा सकता है, जिससे उन्हें मूल्यवान अंतर्दृष्टि मिल सकती है जो उद्यमशीलता की पहल को प्रेरित कर सकती है [9]।

4. अकादमिक स्टार्टअप में योगदानकर्ता

स्टार्टअप की सफलता को अक्सर कई कारकों के संयोजन के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, जिसमें संस्थापकों की उद्यमशीलता की भावना, संसाधनों और सलाह तक पहुंच और सहायक पारिस्थितिकी तंत्र शामिल हैं। अकादमिक स्टार्टअप में उनके योगदान के लिए मान्यता प्राप्त कुछ संस्थान भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM), भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) बेंगलूर, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (NIT), बिट्स पिलानी, दिल्ली प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (DTU) और सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, पुणे [10] हैं।

4.1 अकादमिक स्टार्टअप

भारत में शैक्षणिक संस्थानों से उभरे विभिन्न क्षेत्रों के कई अकादमिक स्टार्टअप हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं: प्रतिलिपि (आईआईटी कानपुर): यह भारतीय भाषाओं के लिए एक ऑनलाइन स्व-प्रकाशन मंच है, सिम्पलीलर्न (आईआईएम बेंगलूर): यह एक ऑनलाइन शिक्षण मंच है जो पेशेवर प्रमाणन पाठ्यक्रम प्रदान करता है, ज़ोमैटो (आईआईटी दिल्ली): यह एक वैश्विक रेस्तरां खोज और खाद्य वितरण मंच है, म्यू सिग्मा (आईआईएम बेंगलूर): यह एक डेटा एनालिटिक्स कंपनी है जो निर्णय समर्थन समाधान प्रदान करती है, इनमोबी (आईआईटी कानपुर): यह एक वैश्विक मोबाइल विज्ञापन मंच है, फ्लिपकार्ट (आईआईटी दिल्ली): यह भारत के अग्रणी ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों

में से एक है, ओयो रूम्स (आईआईटी रुड़की): ओयो रूम्स एक प्रमुख होटल एग्रीगेटर और आतिथ्य सेवा है, टॉपर (आईआईटी बॉम्बे): यह एक एडटेक प्लेटफॉर्म है जो व्यक्तिगत शिक्षण समाधान प्रदान करता है।

4.2 ऐसे कारक जिन्होंने संस्थानों को स्टार्टअप के लिए उपजाऊ बनाया

टियर 1 संस्थान अकादमिक स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देने में सबसे बड़ा योगदानकर्ता हैं। जबकि प्रत्येक संस्थान की अपनी अनूठी रणनीतियाँ हो सकती हैं, कुछ सामान्य अभ्यास और पहलों में शामिल हैं [20]:

-इन्क्यूबेशन सेंटर: इनक्यूबेशन सेंटर स्टार्टअप को बुनियादी ढाँचा, सलाह और सहायता प्रदान करते हैं।

-उद्यमिता प्रकोष्ठ: ये प्रकोष्ठ छात्रों को उद्यमशील उपक्रमों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और सेमिनार आयोजित करते हैं।

-उद्योग सहयोग: संस्थान अक्सर कंपनियों के साथ मजबूत संबंध बनाते हैं, जिससे छात्रों और शिक्षकों को वास्तविक दुनिया की समस्या-समाधान और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में संलग्न होने की अनुमति मिलती है।

-सीड फंडिंग और अनुदान: यह वित्तीय सहायता स्टार्टअप को उनके शुरुआती चरणों के दौरान मदद करती है और अधिक छात्रों को उद्यमिता में उतरने के लिए प्रोत्साहित करती है।

-अनुसंधान और नवाचार: शैक्षणिक वातावरण छात्रों और शिक्षकों को अत्याधुनिक अनुसंधान में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे वाणिज्यिक क्षमता वाली प्रौद्योगिकियों का विकास होता है।

-उद्यमिता पाठ्यक्रम: पाठ्यक्रम में उद्यमिता पाठ्यक्रमों को शामिल करने से छात्रों को व्यवसाय शुरू करने और उसे प्रबंधित करने में व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने की अनुमति मिलती है [17]।



अंजीर। 4: अकादमिक स्टार्टअप का भारत

-नेटवर्किंग कार्यक्रम: संस्थान के भीतर और बाहरी हितधारकों के साथ नियमित नेटवर्किंग कार्यक्रम छात्रों को सलाहकारों, निवेशकों और उद्योग के पेशेवरों से जुड़ने के अवसर प्रदान

करते हैं। ये कार्यक्रम स्टार्टअप के लिए एक मजबूत समर्थन नेटवर्क बनाने में मदद करते हैं।

-प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यालय: अनुसंधान के माध्यम से उत्पन्न बौद्धिक संपदा के व्यावसायीकरण के लिए जिम्मेदार प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यालय। यह प्रक्रिया शैक्षणिक अनुसंधान को व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य उत्पादों या सेवाओं में बदलने की सुविधा प्रदान करती है।

-हैकथॉन और प्रतियोगिताएँ: हैकथॉन, प्रतियोगिताएँ और नवाचार चुनौतियों का आयोजन छात्रों को वास्तविक दुनिया की समस्याओं पर काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है और उन्हें अपने उद्यमशीलता के विचारों को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है [22]।

-पूर्व छात्रों का समर्थन: उद्यमिता में सफलतापूर्वक कदम रखने वाले पूर्व छात्रों को शामिल करना मूल्यवान सलाह और समर्थन प्रदान कर सकता है। पूर्व छात्र नेटवर्क अक्सर स्टार्टअप को मार्गदर्शन और वित्त पोषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं [14]।

-सरकारी और कॉर्पोरेट सहयोग: सरकारी निकायों और कॉर्पोरेट संस्थाओं के साथ सहयोग इन संस्थानों को स्टार्टअप के लिए अतिरिक्त संसाधनों, वित्त पोषण और अवसरों तक पहुँचने में सक्षम बनाता है [12]।

-विविध क्षेत्रों पर ध्यान दें: प्रौद्योगिकी और जैव प्रौद्योगिकी से लेकर सामाजिक उद्यमिता तक विविध क्षेत्रों में स्टार्टअप को प्रोत्साहित करें। ये अभ्यास सामूहिक रूप से एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जहाँ अकादमिक शोध और नवाचार सहज रूप से व्यवहार्य स्टार्टअप में परिवर्तित हो सकते हैं। उद्यमिता को बढ़ावा देने में इन संस्थानों का सक्रिय दृष्टिकोण भारत में अकादमिक स्टार्टअप क्षेत्र में अग्रणी के रूप में उनकी प्रतिष्ठा में योगदान देता है [15]।

5. निष्कर्ष

भारत में कुछ संस्थान उद्यमिता के लिए अनुकूल माहौल प्रदान करते हैं, लेकिन भारत की विशाल क्षमता, विशेष रूप से इसके जनसांख्यिकीय लाभांश के संदर्भ में, उनका प्रभाव अपर्याप्त है। भारत में शैक्षणिक संस्थानों के भीतर एक संपन्न स्टार्टअप वातावरण की स्थापना में कई चुनौतियाँ बाधा डालती हैं। सरकारी पहलों के बावजूद, उल्लेखनीय परिणाम मायावी रहे हैं, जिसका मुख्य कारण शिक्षा ढाँचे के भीतर प्रणालीगत मुद्दे हैं। इन सीमाओं को पहचानते हुए, 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) की शुरुआत भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में उभरी है। नीति दृष्टिकोण में बदलाव को प्रोत्साहित करती है, शिक्षा को ऐसे लेंस के माध्यम से देखती है जो शैक्षिक उत्कृष्टता वाले देशों में पाए जाने वाले स्थापित अकादमिक स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के साथ संरेखित होता है। एनईपी 2020 का कार्यान्वयन भारत में शिक्षा पर एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण की शुरुआत करता है। यह बदलाव महानगरीय क्षेत्रों या राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि देश के हर कोने में व्याप्त होना चाहता है। इन सुधारों के सफल कार्यान्वयन से भारत में शिक्षा के क्षेत्र

में मजबूत उद्यमशीलता की भावना विकसित होने की संभावना है।

संदर्भ

1. <https://hr.economictimes.indiatimes.com/news/industry/a-focus-on-academic-entrepreneurs-in-india/79561531>
2. <https://www.investindia.gov.in/indian-unicorn-landscape>
3. <https://firstsiteguide.com/startup-stats/>
4. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
5. <https://thewire.in/science/why-academic-startups-in-india-have-it-trickier-than-most>
6. https://mic.gov.in/assets/doc/startup_policy_2019.pdf
7. <https://yourstory.com/2020/07/edtech-startup-bullish-new-national-education-policy-nep2020>
8. <https://government.economictimes.indiatimes.com/news/education/opinion-exploring-potential-of-education-and-skill-development-startups-in-the-light-of-nep-2020>
9. <https://inc42.com/infocus/startup-policy-rundown/startup-policy-rundown-nep-offers-more-avenue-for-edtech-startups-more/>
10. Agrawal, E., Tungikar, V., Joshi, Y.: Method for assessment and attainment of course and program outcomes for tier-i institutes in india. *Journal of Engineering Education Transformations* **34**(3), 35–41 (2021)
11. Aithal, P.S., Aithal, S.: Strategies of higher education part of national education policy 2020 of india towards achieving its objectives. *International Journal of Management, Technology, and Social Sciences (IJMTS)* pp. 283–325 (12 2020)
12. Ankrah, S., Omar, A.T.: Universities–industry collaboration: A systematic review. *Scandinavian Journal of Management* **31**(3), 387–408 (2015)
13. Chandramouli, R.: Thoughts on academic entrepreneurship in india. *International Conference on HRD: Human Capital and Competency Building* (09 2016)
14. Favere-Marchesi, M., Emby, C.: The alumni effect and professional skepticism: An experimental investigation. *Accounting Horizons* **32**(1), 53–63 (2018)
15. Garg, M., Gupta, S.: *Startups and the growing entrepreneurial ecosystem* (2021)
16. Kandakatla, R., Aluvalu, R., Devireddy, S., Kulkarni, N., Joshi, G.: Role of indian higher education institutions towards atmanirbhar india: Government policies and initiatives to promote entrepreneurship and innovation. In: 2021 World Engineering Education Forum/Global Engineering Deans Council (WEEF/GEDC). pp. 8–14 (2021)
17. Nabi, G., Lin'an, F., Fayolle, A., Krueger, N., Walmsley, A.: The impact of entrepreneurship education in higher education: A systematic review and research agenda. *Academy of management learning & education* **16**(2), 277–299 (2017)
18. Nayanjyoti Goswami, Ashutosh Bishnu Murti, R.D.: Why do indian startups fail? a narrative analysis of key business stakeholders. *Indian Growth and Development Review* pp. 141–157 (2023)
19. Satyanarayana, K., C.D..M.H.B.: An assessment of competitiveness of technology- based startups in India. Springer p. 28–38 (2021)
20. Scillitoe, J.L., Birasnav, M.: Ease of market entry of Indian startups: formal and informal institutional influences. *South Asian Journal of Business Studies* **11**(2), 195–215 (2022)
21. Sridhar, K.S., Nayka, S.: Determinants of Commute Time in an Indian City. *Marginal: The Journal of Applied Economic Research* **16**(1), 49–75 (February 2022)
22. Szymanska, I., Sesti, T., Motley, H., Puia, G.: The effects of hackathons on the entrepreneurial skillset and perceived self-efficacy as factors shaping entrepreneurial intentions. *Administrative Sciences* **10**(3), 73 (2020)